महाशिवरात्रि 'महापर्व' की महिमा

- ब्र.कु.सूर्य, माउण्ट आबू

सृजनकर्त्ता शिव के कलियुग की महारात्रि के समय अ-वतरण की याद में मनाई जाती है - महाशिवरात्रि। यों तो प्रत्येक पर्व का अपना-अपना महत्व है तथापि शि-वरात्रि तो सभी पर्वों की भी मानो जननी है। शिव भारत में आते हैं। उनका जन्म नहीं होता, क्योंकि वे जन्म मरण से न्यारे हैं। वे परकाया प्रवेश करते हैं, वे ही सर्व आत्माओं में परम हैं इसलिए परम आत्मा हैं। उनका ही दिव्य कर्त्तव्य है नव सृष्टि की रचना करना, दुःखधाम का अन्त करना तथा सभी आत्माओं को पतित से पावन बनाना।

कब आते हैं शिव

`शिव' उनका दिव्य नाम है। ये नाम उनके शरीर का नहीं है, वे तो सदा ही निराकार हैं। उनका अवतरण होता है तब, जब माया

रावण यहां सभी का अकल्याण कर देता है। वे सबका कल्याण करते हैं - इसलिए उनका नाम `शिव' गाया जाने लगता है।

शिव, रात्रि में आते हैं, परन्तु उस रात्रि में नहीं जो रोज़ होती है। ये महारात्रि तब कहलाती है जब सम्पूर्ण धरा पर अज्ञान का अंधकार छा जाता है, चहुँ ओर पांच विकार हाहाकार मचा देते हैं, मनुष्य दुःखी, अशांत व परेशान होकर उसे पुकारने लगते हैं कि हे ज्ञान सूर्य आओ, इस अंधकार को हरो, हमें सत्य ज्ञान का प्रकाश दो। और वह समय होता है कलिकाल का अंत। तब वे प्रजापिता ब्रह्मा के तन में आकर सभी को सत्य ज्ञान देते हैं व राजयोग सिखाते हैं, इससे सभी विकार मुक्त होकर सुखी हो जाते हैं। उसी की यादगार में यह महापर्व मनाया जाता है।

अब शिव स्वयं जगाने आये हैं

प्यारे भक्तों, अब तक आप हर वर्ष शिव-रात्रि के समय पूरी रात जागकर शिव का आह्वान करते हो व उसके दर्शनों की अभिलाषा रखते हो। अब आपका इन्तज़ार खत्म हुआ है, शिव स्वयं जगाने आये हैं, अब जागो। परन्तु अब आपको सदा के लिए जागना है। आप सोचेंगे कि ये कैसे होगा? जैसे हम सदा के लिए जाग गये हैं, वैसे ही आपको भी जागना होगा। ये जागना है - अज्ञान की नींद से। मालूम है किसने सुलाया है आपको इस कुम्भकरण की नींद में? रा-वण ने। ये रावण लंका अधिपति नहीं, अब विश्वाधिपति है। ये रावण है - पांच विकारों का नाम। काम, क्रोध, लोभ, मोह व अह-कार। इन्होंने ही चहुँ ओर अंधकार व्याप्त कर सबको सुला दिया है। अब जागो। जगाने के लिए ज्ञान के सागर परमपिता शिव सत्य ज्ञान दे रहे हैं जिससे हमें अपने सत्य स्वरूप की स्मृति आ जाती है और हम सदा के लिए अज्ञान अंधकार से बाहर आ जाते हैं। अब वे न केवल दर्शन दे रहे हैं, बल्कि सदा मिलन मना रहे हैं, जन्म-जन्म की मिलने की प्यास बुझा रहे हैं। आ जाओ, अपने प्राणेश्वर प्यार के सागर से मिलकर अपनी जन्म-जन्म की प्यास बुझा लो। भक्ति का फल पा लो।

शिव ज़हर पीने पुनः आ गये हैं

पुराणों की कथा तो लोक प्रसिद्ध है कि देव व असुरों ने सागर मंथन किया। जब ज़हर निकला तो सबने शिव का स्मरण किया कि वे ही ज़हर पान कर सकते हैं। वो ज़हर और कुछ नहीं, पांच विकारों का ज़हर ही है। ये विकार बड़े विष हैं जो जीवन को ज़ह-रीला बना देते हैं, सम्बन्धों को ज़हरीला बना देते हैं और जिन्होंने समस्त विश्व को ज़ह-रीला बना दिया है। राष्ट्रों के मध्य भी ज़हर व्याप्त है तो प्रकृति भी ज़हर उगल रही है। अब पुनः सभी ने शिव का स्मरण किया और वे आ गये हैं, सबका ज़हर पीने व बदले में अमृत पिलाने। तो दे दो उन्हें ये अपने पांच विकार जिन्होंने तुम्हारा सबकुछ नष्ट कर दिया है। सारे नहीं तो अपना क्रोध या अहंकार ही दे दो। शिवरात्रि के दिवस पर सच्चे मन से किसी एक बुराई का शिव को दान कर दो तो आपकी भक्ति भी सफल हो जायेगी व जीवन भी।

सदा के लिए व्रत ले लो

भक्ति में बड़ा महत्व है व्रत का। लोग लम्-बी-लम्बी पैदल यात्रा करके शिव पर पवित्र नदियों का जल भी चढ़ाते हैं और कहीं-कहीं बलि भी। ये सब तो हम करते ही आये हैं। अब समय है आजीवन व्रत लेने का, मन को शुद्ध करने का। यदि भक्ति करते व शास्त्र पढ़ते या कठिन पैदल यात्रा करके भी मन शुद्ध न हुआ, आचरण निर्मल न हुआ व कर्म श्रेष्ठ न हुए तो जान लें कि ऐसी भक्ति निष्फल ही जाती है।

जब हम पैदल चलें तो हमारे प्रत्येक कदम में पुण्य समाया हो, हमारे कर्म सुखदाई हों तो शिव पर जल चढ़ाना सार्थक होगा। शिव तो हम पर अमृत चढ़ाते हैं, हम उन पर पुण्य कर्मों का जल चढ़ाकर उसका रिटर्न करें। तो आओ हम पुण्य कर्म करने का व्रत लें और जान लें कि बकरे की बलि शिव को स्वीकार्य नहीं। हम बुराइयों की बलि उन पर चढ़ा दें तो शिव प्रसन्न होंगे और वरदानों से आपकी झोली भर देंगे।

शिव की पूजा तो की अब उनसे मिलन मनाओ

शिव स्वयं सिखला रहे हैं कि मुझसे योगयुक्त होकर निरंतर कैसे मेरे सानिध्य में रहो। एक पार्वती से अर्धनारीश्वर रूप में नहीं, बल्कि वह हम सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों से कम्बाइन्ड रहने आये हैं। देखो तो सही एक बार उनके समीप आकर। वे प्यार के सागर हैं, आपको उनसे पितृवत प्रेम प्राप्त होगा। आपको उनकी पालना का अनुभव होगा, आप उनकी छत्रछाया में आ जायेंगे। उनके साथ रहने का परम सुख जो कि अतीन्द्रिय सुख है, आपको प्राप्त होगा। शिव से आपका प्यार है, आप उनकी संतान भी हैं तो अब प्यार को प्रैक्टिकल में ले आयें, उनके पास आकर।

परन्तु याद रहे वे शिव शंकर नहीं हैं। शंकर तो अपने-अपने पुत्रों के पिता हैं, शिव तो सर्व के परमपिता हैं। शंकर महादेव हैं, तपस्वी हैं, जबकि शिव परम आत्मा हैं, नि-राकार हैं, वे सदा सम्पूर्ण हैं, उन्हें तपस्या की आवश्यकता नहीं। तो आ जाओ अ-पने परमपिता के पास, उनसे मिलना हम सब मनुष्यात्माओं का अधिकार भी है।

हम आपको ध्यान दिलाना चाहते हैं कि शिव के बारे में या महादेव के बारे में ग्रन्थों में कुछ भ्रान्तिपूर्ण बातें भी लिख दी हैं। वे उमा के मोह में दुःखी हुए, वे भांग, धतूरा खाते थे आदि...आदि। ये सब बातें सत्य से दूर हैं। शिव तो सदा सम्पूर्ण, सदा कर्मातीत हैं व पवित्रता के सागर हैं। ये बातें स्थूल नशे की नहीं ईश्वरीय नशे की है। अतः कई भक्त जो शिवरात्रि पर इन नशीली वस्तुओं का सेवन करते हैं, वह प्रभु को प्रिय नहीं हैं, वह त्याज्य हैं। आप शिवरात्रि के दिन इस ईश्वरीय नशे में रहें कि हम शिव के बच्चे हैं, वह हमारा है और वह स्वयं इस धरा पर हमसे मिलने के लिए आया है।

भोपाल-म.प्र.। मध्य प्रदेश के राज्यपाल राम नरेश यादव को नये वर्ष की बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु. अवधेश। साथ हैं अन्य भाई बहनें।

मस्कट। इंद्रामणि पाण्डेय,एम्बेसेडर ऑफ इंडिया टू द सल्तनत ऑफ ओमन के साथ मुलाकात व आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् चित्र में इंद्रामणि पाण्डेय, ब्र.कु. सूर्य, ब्र.कु. रुपेश, ब्र.कु. रामू व ब्र.कु. गायत्री।

दिल्ली-महिपालपुर। मुख्यमंत्री माननीय अरविन्द केजरीवाल व विधायक देवेन्द्र सहरावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनूसुइया। साथ हैं भगवान भाई।

नाहन-हि.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय मेला श्री रेणुका जी में माननीय मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह का स्वागत करते हुए ब्र.कु. रमा।

बिलाड़ा-राज.। विधि एवं कानून राज्यमंत्री अर्जुन लालजी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आरती व ब्र.कु. लता।

मुम्बई-सांताक्रूज़। लखनऊ में राहुल गांधी के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. मीरा।